

डॉ. डैनियल के. डार्को, लूका का सुसमाचार, सत्र 19, यीशु बनाम फरीसी और वकील,

लूका 11:37-12:12

© 2024 डैन डार्को और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. डैन डार्को द्वारा लूका के सुसमाचार पर दिए गए अपने व्याख्यान हैं। यह सत्र 19 है, यीशु बनाम फरीसी और वकील, लूका 11:37-12:12।

लूका के सुसमाचार पर बाइबिल ई-लर्निंग व्याख्यान श्रृंखला में आपका स्वागत है।

तो अब हम यीशु द्वारा फरीसियों और वकीलों से निपटने के बारे में बात करना जारी रखते हैं, और फिर हम जल्दी से संपत्ति या लालच, लोभ और अपने लोगों के लिए परमेश्वर की सहायता करने की क्षमता पर उनकी चर्चा को संबोधित करते हैं। मैं लूका अध्याय 11 के अंतिम भाग से श्लोक 37 पढ़ रहा हूँ। और मैंने पढ़ा कि जब यीशु बोल रहे थे, तो एक फरीसी ने उनसे उनके साथ भोजन करने के लिए कहा।

जब वह अंदर गया और मेज पर बैठा, तो फरीसी यह देखकर हैरान रह गया कि उसने खाने से पहले हाथ नहीं धोए। और प्रभु ने उससे कहा, “हे फरीसियों, तुम प्याले और थाली को बाहर से तो साफ करते हो, पर भीतर से तुम लालच और दुष्टता से भरे हुए हो। हे मूर्खों! जिसने बाहर का भाग बनाया, क्या उसने भीतर का भाग भी नहीं बनाया, परन्तु भीतर की वस्तुओं के लिए हमें हथियार नहीं दिए? देख, तेरे लिए सब कुछ शुद्ध है।”

हे फरीसियो, तुम पर हाय! तुम पुदीने और सुदाब और सब प्रकार के साग-पात का दसवाँ अंश देते हो, और न्याय और परमेश्वर के प्रेम को अनदेखा करते हो। यह तुम्हें करना चाहिए था, और बाकी बातों को भी अनदेखा नहीं करना चाहिए था। हे फरीसियो, तुम पर हाय! तुम आराधनालयों में मुख्य आसन और बाज़ारों में नमस्कार सुनना पसंद करते हो।

हाय तुम पर, क्योंकि तुम उन कब्रों के समान हो जिन पर कोई निशान नहीं है, और लोग अनजाने में उन पर चल देते हैं। यहाँ, हम पाते हैं कि यीशु ने बातचीत में एक बहुत ही दिलचस्प घटनाक्रम को अंजाम दिया। हमें बताया गया है कि एक फरीसी ने यीशु को अपने घर आने के लिए आमंत्रित किया।

जैसा कि मैंने इस कक्षा में पहले उल्लेख किया था, लूका और कॉर्पस में फरीसी हमेशा नकारात्मक चरित्र नहीं होते हैं। लूका के सुसमाचार और प्रेरितों के काम दोनों में, फरीसी कभी-कभी यीशु के साथ अपने व्यवहार में सकारात्मक तत्व या योगदान देते हैं। यहाँ, उनमें से एक ने उसे अपने घर आमंत्रित किया।

फिर से, हमने अध्याय 7 में थोड़ा पहले देखा। और यीशु ने निमंत्रण स्वीकार किया और चला गया, सिवाय इसके कि वह खुद को मुसीबत में डालने जा रहा था। उसके लिए निमंत्रण स्वीकार करना

आतिथ्य के सांस्कृतिक मानदंडों को स्वीकार करना है। यह उस व्यक्ति के लिए एक विशेषाधिकार था जिसने यीशु को अपने घर आने के लिए आमंत्रित किया और यीशु के लिए भी उसके घर में मेहमान बनना एक विशेषाधिकार था।

परंपरा के अनुसार, जब आप मेहमान के रूप में किसी के घर जाते हैं, तो आप वास्तव में मेजबान की अपेक्षाओं का पालन करते हैं ताकि आप उस अवसर का पूरा आनंद उठा सकें। यहाँ हम कुछ अलग देखने जा रहे हैं। चीजें बहुत जल्दी बदल जाएँगी।

यीशु के सामने ऐसी स्थिति होगी जहाँ वह इसे पलट देगा और ऐसा दिखाएगा कि वह किसी के घर में है, लेकिन वह प्रभारी होने जा रहा है। यह यीशु को एक बुरा मेहमान बनाता है। लेकिन हम देखेंगे कि संस्कृति के अनुसार, यीशु इन चीजों को कैसे प्रबंधित करने जा रहा है।

जब लूका, जैसा कि हम यहाँ लूका में देखेंगे, आयत 37 से 54 के इस विशेष विवरण में, लूका फरीसियों और वकीलों को एक साथ लाने जा रहा है। जब भी लूका फरीसियों और वकीलों को एक साथ लाता है, तो हम कुछ और देखते हैं। यह हमेशा यह दिखाने वाला होता है कि दोनों पक्षों और यीशु के बीच किसी तरह का हंगामा होने वाला है या कुछ होने वाला है।

कभी-कभी यह उन दिलों में से एक होता है जो यीशु के साथ कुछ नकारात्मक करने के लिए अलग-थलग पड़ जाते हैं। हम यह भी जानते हैं कि इनमें से कुछ लोग, जिन्हें नोमिकोस या वकील कहा जाता है, फरीसी होंगे। इसलिए, यह देखना बहुत दिलचस्प है कि लूका इन बातों को कैसे उजागर करता है क्योंकि कभी-कभी ऐसा लगता है कि लूका जानता है कि वे सभी फरीसी हैं, लेकिन वह वकीलों को सामान्य फरीसी से अलग करने की कोशिश कर रहा है ताकि यीशु और बाकी समुदाय के लिए कुछ विशेष परेशानी पैदा करने वालों के बीच अंतर किया जा सके।

हम इन अंशों में देखते हैं कि जैसे-जैसे यह आगे बढ़ता है, हम देखेंगे कि प्रतियोगिता भोजन के समय की सेटिंग है। भोजन का समय लूका के लिए बहुत, बहुत महत्वपूर्ण है, और यह यीशु, फरीसियों और वकीलों के बीच भोजन का समय होने वाला है। मैं यह कहना पसंद करता हूँ कि यीशु की सेवकाई को कभी-कभी अमेरिकी ईसाई धर्म के संदर्भ में अच्छी तरह से समझा जाना चाहिए।

अमेरिका में, हम जिस चीज़ से सबसे ज़्यादा प्यार करते हैं, वह है खाना। लूका के सुसमाचार में, भोजन का समय पूरे सुसमाचार और प्रेरितों के काम की पुस्तक में महत्वपूर्ण रूप से शामिल है। वास्तव में, यदि आप लूका के प्रवचन का अनुसरण करते हैं, तो आप देखेंगे कि शायद हम जिस चीज़ पर पर्याप्त ज़ोर नहीं देते हैं, वह है सुसमाचार के प्रसार और सामुदायिक गतिविधियों के संदर्भ में प्रारंभिक चर्च के विस्तार में भोजन के समय की भूमिका।

भोजन का समय बहुत महत्वपूर्ण था। इसलिए, यीशु ने इस प्रस्ताव को स्वीकार किया और भोजन करने चले गए। इसका संस्कृति से क्या संबंध है? खैर, सांस्कृतिक रूप से, यह एक बड़ी बात है।

मुझे मिस्र जाना पसंद है, और मुझे मिस्र का खाना भी पसंद है, लेकिन मैं मिस्र की संस्कृति के बारे में भी कुछ जानता हूँ। अगर आपको मिस्र के किसी घर में मेहमान के तौर पर आमंत्रित

किया जाता है, तो यह बहुत बड़ी बात होती है। सबसे पहले, आपको घर में आमंत्रित किए जाने का मतलब है कि आप एक भरोसेमंद दोस्त हैं या कोई ऐसा व्यक्ति हैं जिसे जानने और आपको अपने घरे में लाने में वे बहुत, बहुत दिलचस्पी रखते हैं।

फिर, दूसरा पहलू सच हो जाता है: जब आप किसी खास मेहमान के तौर पर घर जाते हैं, तो वे ढेर सारा खाना बनाते हैं। और अगर आपको लगता है कि आप अपने किसी मित्र के साथ भोजन करने जा रहे हैं, जिसने आपको आमंत्रित किया है, तो आप वास्तव में गलत हैं। जैसा कि वे आपको बताएंगे, ऐसा सभी मध्य पूर्वी या अरबी-भाषी संस्कृतियों में नहीं होता है।

उसने कहा, तुम क्या बात कर रहे हो? क्या तुम्हें लगता है कि तुम अमेरिका में हो? खाने के लिए घर आओ। इसका मतलब है कि परिवार से मिलना। आओ और सभी से मिलो।

इसलिए, यीशु एक फरीसी के आंतरिक घरे में आने का अवसर लेकर आते हैं, जहाँ हम देखेंगे कि, हाँ, यह सच है। वह वहाँ आता है और अधिक फरीसियों और अधिक वकीलों से मिलता है। इस पाठ को पढ़ते समय हमें इस बात को नज़रअंदाज़ नहीं करना चाहिए।

मार्शल ने इस अवलोकन में कुछ दिलचस्प बात बताई है। जब हम सोचते हैं कि हम किस तरह का भोजन करेंगे, तो मार्शल हमें उस तरह के भोजन की याद दिलाते हैं जो आमतौर पर सुबह, दोपहर और शाम को परोसा जाता है। जैसा कि आप मेरे द्वारा स्क्रीन पर दिखाए गए अंश से देख सकते हैं, वह दिखाता है कि उच्च वर्ग क्या करेगा।

अब, अगर हम यहाँ लूका द्वारा इस्तेमाल की गई भाषा पर आगे बढ़ें, तो कोई कह सकता है कि यीशु फरीसियों और वकीलों के साथ नाश्ता करने जा रहा था, या शायद वह ब्रंच कर रहा था। इसे अपने दिमाग में रखें, लेकिन यह यहाँ मुख्य मुद्दा नहीं होना चाहिए। यहाँ विवाद का एक बड़ा मुद्दा हाथ धोने का मुद्दा है।

यहाँ, मैं हाथ धोने के बारे में थोड़ा और बात करना चाहता हूँ। लूका ने बपतिज़ो शब्द का इस्तेमाल किया है, क्रिया बपतिज़ो का मतलब है कि यीशु ने डुबकी नहीं लगाई, यीशु ने अपना हाथ पानी में नहीं डाला। इसका क्या मतलब है? क्योंकि यह यीशु, फरीसियों और घर के वकीलों के बीच समस्या का एक बड़ा स्रोत होने जा रहा है।

फिर से याद रखें, यीशु एक अतिथि हैं, और रीति-रिवाज के अनुसार, उन्हें अपने मेजबान की अपेक्षाओं का पालन करना चाहिए। उस समय के यहूदी रीति-रिवाजों में यही नियम है। यह आतिथ्य का एक प्रमुख रिवाज है, और इसका पालन करना होगा।

लेकिन हाथ धोने के मामले में क्या चल रहा है? पहली बात जो आपको जाननी चाहिए वह यह है कि हमारे पास पुराने नियम या, सामान्य रूप से, यहूदी परंपरा में ऐसा कोई परीक्षण नहीं है, जो यह सुझाव देता हो कि लोगों को यहाँ वर्णित तरीके से हाथ धोना चाहिए। लेकिन हम जानते हैं कि यह कुछ ऐसा था जो विशेष रूप से फरीसियों के बीच प्रचलित था। हम जानते हैं कि कुछ यहूदी संप्रदायों में भोजन के समय के आसपास कुछ खास प्रथाएँ होती हैं।

बैप्टीज़ो शब्द का इस्तेमाल करते हुए डुबकी लगाने का मतलब शारीरिक स्वच्छता से नहीं है। उदाहरण के लिए, अगर कोरोनावायरस है, तो आपको अपने हाथ धोने की ज़रूरत है, और आपके पास बहुत सारा लोशन होना चाहिए। यहाँ ऐसा कुछ नहीं है।

यहाँ मुद्दा शारीरिक स्वच्छता का नहीं बल्कि फरीसियों की अपेक्षा में अनुष्ठानिक स्नान या डुबकी लगाने का है। अब, यदि आप इतिहासकार, यहूदी इतिहासकार, जोसेफस को उनके यहूदी युद्ध, 2-128 में पढ़ते हैं, तो आपको याद होगा, और यदि आप इस पर अध्ययन करने वाले विद्वान हैं, और यदि आप विद्वान नहीं हैं, तो मुझे क्षमा करें, मैं बस यह समझाने की कोशिश करूँगा कि जोसेफस वहाँ क्या कह रहा था। जोसेफस हमें एक पाप समुदाय की याद दिलाता है, कुमरान स्कॉल के संरक्षक जिनके बारे में हम अक्सर बात करते हैं; उनके पास एक परंपरा थी जहाँ भोजन से पहले, आप सिर्फ डुबकी नहीं लगाते; आप वास्तव में अपना पूरा शरीर धोते हैं।

आप नहाते हैं, यही वहाँ इस्तेमाल की जाने वाली भाषा है। अब, फरीसी परंपरा यह है कि आप पानी में डुबकी लगाते हैं, अपना हाथ बाहर निकालते हैं, और यह साफ हो जाता है, और फिर आप भोजन कर सकते हैं। ऐसा करने के लिए, जब आपको किसी घर में मेहमान के रूप में आमंत्रित किया जाता है, तो यह आपको समूह में लाता है, और ऐसा करके आप समूह की स्वीकृति प्राप्त करते हैं।

यदि आप इसका पालन नहीं करते हैं, तो आप वास्तव में इन-ग्रुप में नहीं होंगे। तो, देखिए यीशु ने वहाँ क्या किया। हम पाते हैं कि वे यीशु के बारे में बात कर रहे हैं जिन्होंने ल्यूक के वर्णन के अनुसार डुबकी नहीं लगाई, लेकिन यीशु आप फरीसियों के बारे में बात करेंगे; यदि आप सफाई में रुचि रखते हैं, तो वह उस शब्द का उपयोग करता है जिसका वास्तव में मतलब है शुद्ध करना।

उन्होंने कहा कि आपको शुद्धि पसंद है; आप एक कटोरा लें; आप बाहरी सफाई करना पसंद करते हैं, आंतरिक सफाई नहीं। वह डुबकी लगाने, बपतिज़ो, शब्द से हटकर ग्रीक में सफाई के लिए इस्तेमाल होने वाले शब्द का इस्तेमाल करते हैं। शुद्धता के सच्चे अर्थ के बारे में बात करते हुए।

यीशु ने फरीसियों की इच्छा के अनुसार कार्य करने से मना कर दिया, जिससे वह स्पष्ट रूप से एक बाहरी समूह की तरह दिखाई दे सकता है। उसे यह देखना चाहिए था, लेकिन वह ऐसा नहीं देख रहा है। इससे भी बदतर, वह एक अतिथि है, और अब वह मेज़बान के व्यवहार की आलोचना करना शुरू कर रहा है।

अब, लूका ने उसे प्रभु कहा है, और फिर एक अतिथि के रूप में, वह किसी के घर में खड़ा है और उसे मूर्ख कहता है। यूनानी शब्द मूर्ख के लिए नहीं है, बल्कि मूर्ख के लिए है। यीशु ने जो किया वह बहुत दिलचस्प है।

वह किसी के घर रात्रि भोज के लिए जाता है, और वह पार्टी की जिम्मेदारी लेता है। क्यों? क्योंकि यहूदियों, फरीसियों के साथ औपचारिक शुद्धिकरण, कुछ ऐसा पेश कर रहा है जिसे यीशु मामले के मूल तक पहुँचने के लिए एक वस्तुगत पाठ के रूप में इस्तेमाल करने जा रहा है। कुछ ऐसा

जिसे इन सख्त यहूदी कानून के पालनकर्ता, जो लोग धर्मनिष्ठता में रुचि रखते हैं, उन्हें मानना चाहिए और सही काम करना चाहिए।

यीशु कुछ विशेष आयामों को दिखाने के लिए अंदर-बाहर की भाषा का उपयोग करेंगे। हम देखते हैं कि लूका कहता है कि वह घर में आता है, और बाद में, हम देखते हैं कि वह बाहर जाएगा। यीशु कप के भीतरी भाग और कप के बाहरी भाग के साथ-साथ यहाँ बाहरी और आंतरिक भावों का वर्णन करेंगे।

यदि वे चाहते थे कि यीशु समूह का सदस्य बने, या यदि वे यीशु को साथियों की संगति के लिए एक विशेष अतिथि के रूप में आमंत्रित करते, तो यीशु ने पूरी बात को उल्टा कर दिया। रात्रिभोज की बातचीत इसलिए खराब हो गई क्योंकि यीशु ने उनका अपमान किया था, यदि आप चाहें तो। और यदि वे जवाब देने जा रहे थे, तो यीशु ने पहले ही खुद को प्रभु के रूप में स्थापित कर लिया था और कमान संभाल ली थी और कहा था, अरे मूर्खों, और फिर उससे आगे, वह उन्हें यथासंभव कठोर तरीके से चेतावनी देने जा रहा था।

मैंने एक चार्ट बनाया है कि यीशु ने इन फरीसियों के लिए अपनी चेतावनी को आपके लिए किस तरह से तैयार किया है। क्या आप देखते हैं कि यह कैसे शुरू होता है? अब वह जाता है, तुम फरीसियों, प्याले और बर्तन के बाहर की सफाई करो। और फिर वे बाहर क्या करते हैं, इस बारे में बात करते हुए, वह उस कॉलम में उनकी निंदा करता है जो मैंने तुम्हें वहाँ दिया था।

इसलिए, तीन स्तंभों को ध्यान से देखें: वे बाहर क्या करते हैं, वे क्या अनदेखा करते हैं, और निर्णय। वह कहता है, लेकिन हे फरीसियों, तुम पर हाय, क्योंकि तुम पुदीने और सुदाब और हर जड़ी-बूटी का दसवाँ हिस्सा देते हो। श्लोक 43, हे फरीसियों, तुम पर हाय, क्योंकि तुम आराधनालयों में सबसे अच्छी सीटें और बाज़ार में अभिवादन पसंद करते हो।

पद 44, हाय तुम पर, फरीसियों, तुम बे-पहचानी कब्रों के समान हो। और फिर वह कहता है, यही वह है जिसकी तुम उपेक्षा करते हो। भीतर से तुम लालच और दुष्टता से भरे हुए हो।

तुम सही काम करने में लापरवाही करते हो। जैसा कि हम शोक कथन के बाद देखते हैं, वह आगे कहता है कि वे न्याय और परमेश्वर के प्रेम की उपेक्षा करते हैं। फैसला यह है, तुम श्लोक 40 देखते हो, हे मूर्खों, जिसने बाहर बनाया उसने भीतर भी नहीं बनाया, लेकिन हमें हथियार दे दो, वे चीजें जो भीतर हैं और देखो, तुम्हारे लिए सब कुछ साफ है।

फिर, दूसरा फैसला यह है कि आपको यह करना चाहिए था, अर्थात् न्याय और ईश्वर के प्रति प्रेम, बिना इसकी उपेक्षा किए। और दशमांश और रूए के बारे में बात करते हुए, मुझे आगे बढ़ने से पहले यहाँ एक त्वरित नोट करना चाहिए, कि आपको पता होना चाहिए कि लूका ने जिन जड़ी-बूटियों का उल्लेख किया है, उनमें से कुछ दशमांश से मुक्त हैं। इसलिए, जड़ी-बूटियों या उन वस्तुओं के विवरण के बारे में बहस करने में बहुत समय बर्बाद किए बिना, जिनके बारे में लूका बात कर रहा है, दशमांश, और वह सब, मैं बस इस तथ्य पर आपका ध्यान आकर्षित करना

चाहता हूँ कि लूका ने जिन जड़ी-बूटियों का उल्लेख किया है, उनमें से कुछ वास्तव में छूट प्राप्त हैं।

सूची में जो कुछ भी है वह सब दशमांश का हिस्सा नहीं है। लेकिन उनका कहना है कि वे दशमांश के बारे में बहुत सावधान हैं, जो एक अच्छी बात है। लेकिन वे इसे बढ़ा-चढ़ाकर पेश करते हैं और न्याय तथा ईश्वर के प्रति प्रेम जैसी बुनियादी बातों की उपेक्षा करते हैं।

परिणामस्वरूप, यीशु का कथन अब सार्थक हो जाता है क्योंकि वह कहता है, उन्हें मामले के मर्म को समझना चाहिए, और वह यह है कि परमेश्वर के राज्य में पाखंड अस्वीकार्य है। यदि वह, यीशु, मार्ग का नेतृत्व कर रहा है, तो लोगों को पता होना चाहिए कि अंदर भी उतना ही साफ होना चाहिए जितना बाहर, और यदि कुछ भी हो, तो आंतरिक सफाई बाहरी दिखावे से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। फरीसियों को, वह यह कहते हुए फटकार लगाता है कि वे सार्वजनिक दृष्टि में रहना चाहते हैं, वे सार्वजनिक स्थान पर दिखाई देना चाहते हैं, यदि आप चाहें तो वे दिखावा करने वाले हैं।

आतिथ्य के नियमों को उलटकर और इसे फरीसियों के सिर पर थोपना भी इस पूरी स्थिति को जन्म देता है, जहाँ फरीसी इस समय उसके खिलाफ हो सकते हैं। हालाँकि विवाद का मुद्दा क्या है? विवाद का मुद्दा इतना ही बुनियादी है। यीशु अंदर आ सकते थे, और वह नहा सकते थे, अपने हाथ डुबो सकते थे, और बैठकर खा सकते थे, और उनके बीच कुछ अच्छी धार्मिक बातचीत हो सकती थी, और फिर बातचीत आगे बढ़ जाती, और फिर वे अलविदा कहते, वे शायद शालोम, शालोम कहते, और वे चले जाते, और हर कोई अपना अच्छा समय बिताता।

यीशु ने उन सभी को गड़बड़ कर दिया। लेकिन जैसे कि यह पर्याप्त नहीं है, क्योंकि यीशु ने फरीसियों को तीन बार दुख व्यक्त किया है, वकीलों में से एक को लगता है कि वह बहुत कठोर था; यह एक शानदार रात्रिभोज का समय माना जाता है, लेकिन यीशु पूरी बात को बिगाड़ रहा है। इसलिए, श्लोक 45 में, जब मैंने पढ़ा, तो वकीलों में से एक ने उसे उत्तर दिया, गुरु, ये बातें कहकर आप हमारा भी अपमान करते हैं, उसने कहा।

और उसने कहा, हाय तुम व्यवस्थापकों पर भी, क्योंकि तुम लोगों पर बोझ लादते हो, और तुम स्वयं उन बोझों को अपनी एक उँगली से भी नहीं छूते। हाय तुम पर, क्योंकि तुम उन भविष्यद्वक्ताओं की कब्रें बनाते हो, जिन्हें तुम्हारे पूर्वजों ने मार डाला, और तुम स्वयं उनके कामों के साक्षी हो, और तुम भी उनके कामों से सहमत हो, क्योंकि उन्होंने उन्हें मार डाला, और तुम उनकी कब्रें बनाते हो। इसलिए, परमेश्वर की बुद्धि ने भी कहा, मैं उनके पास भविष्यद्वक्ताओं और प्रेरितों को भेजूँगा, जिनमें से वे कुछ को मार डालेंगे और सताएँगे, ताकि जितने भविष्यद्वक्ताओं का खून जगत की उत्पत्ति से हुआ है, उसका दोष इस पीढ़ी पर लगाया जाए, हाबिल की हत्या से लेकर जकरयाह की हत्या तक, जो वेदी और पवित्रस्थान के बीच में नाश हुआ।

हाँ, मैं तुमसे कहता हूँ, यह इस पीढ़ी से अपेक्षित होगा। हे न्यायविदों, तुम पर हाय, क्योंकि तुमने ज्ञान की कुंजी छीन ली है और स्वयं प्रवेश नहीं किया, और जो प्रवेश कर रहे थे, उन्हें भी तुमने

रोका है। यीशु ने वकीलों की ओर उसी लहजे में बात की, जैसा उन्होंने फरीसियों की ओर किया था, और ऐसा लगता है कि जिस वकील ने यह प्रश्न पूछा है, उसने खुद को एक गड़बड़ स्थिति में डाल दिया है। वह कहता है कि तुम फटकार के पात्र हो।

यीशु ने उनकी आलोचना करते हुए कहा, वे लोगों पर व्यवस्था के पालन के संबंध में कठोर बोझ डालते हैं। उन्हें पता होना चाहिए कि वे उन सभी दुष्टताओं में सहभागी हैं जो उनके पूर्वजों ने परमेश्वर के भविष्यद्वक्ताओं के साथ की थीं, बाइबल में वर्णित सबसे पहले भविष्यद्वक्ता हाबिल से, जिसका जीवन परमेश्वर के अच्छे काम की गवाही देने वाला था और जिसे मार दिया गया था, से लेकर इतिहास 24 में मरने वाले अंतिम भविष्यद्वक्ता जकर्याह तक।

उनके पूर्वजों ने लगातार उन भविष्यद्वक्ताओं को मार डाला है जो उन्हें ईश्वर के बारे में अच्छी बातें बताने के लिए आते हैं। वह हाबिल के खून का जिक्र करता है, जो एक भाई की ईर्ष्या और क्रोध के परिणामस्वरूप बहाया गया खून था। वह कहता है कि वकील की प्रतिक्रिया कुछ ऐसी संवेदनाओं को प्रेरित कर रही है, जो उन्हें बहुत, बहुत दोषी बनाती है।

उन्हें वास्तव में परमेश्वर की बुद्धि से सीखना चाहिए था। यहाँ फिर से, मुझे ध्यान देना चाहिए कि हमें परमेश्वर की बुद्धि जैसी किसी पुस्तक का ज्ञान नहीं है। लूका परमेश्वर की बुद्धि को एक सामान्य सिद्धांत के रूप में संदर्भित कर सकता है, या वह किसी ऐसे पाठ का उल्लेख कर सकता है जिसके बारे में हम नहीं जानते।

लेकिन जब यीशु फरीसियों को डांटते हैं और रात्रिभोज के दौरान वकीलों को डांटते हैं, तो वह उन्हें उचित स्थान पर रखते हैं, और अगर आप चाहें, तो साथ में बिताया गया अच्छा समय अब बहुत बुरा समय बन जाता है। वह चले जाएँगे। और हमें बताया गया है, जैसे ही वह वहाँ से चले गए, श्लोक 53, शास्त्री और फरीसी उन पर दबाव डालने लगे और उन्हें कई बातों के बारे में बोलने के लिए उकसाने लगे, ताकि वे उन्हें कुछ ऐसा कह दें जिससे वे फंस जाएँ।

खैर, आप कह सकते हैं, उन्हें यीशु के साथ ऐसा क्यों करना चाहिए? यीशु एक अच्छे इंसान होंगे। ओह हाँ, मैं सहमत हूँ। लेकिन बात यह है कि आपने यीशु को अपने घर आमंत्रित किया, और अपने सभी दोस्तों को भी साथ ले आए।

वह अंदर आया, आपके दोस्त के सामने आपको अपमानित किया, उनसे हर तरह की कठोर बातें कहीं, और फिर वह बस चला गया। लूका हमें इस बारे में कोई भी झलक नहीं देता कि मेजबान यीशु से बदले में क्या कह सकता है। वे जवाब में कुछ भी नहीं कह सकते थे।

तो अब अगली बात यह है कि, आइए देखें कि अगर हम उसे मुसीबत में डाल दें तो वह क्या करेगा। लूका के अध्याय 12 को पढ़ते हुए, मैं चाहता हूँ कि आप कुछ अवलोकन करें। मैं चाहता हूँ कि आप महसूस करें कि यीशु अब जान रहे हैं कि फरीसी और शास्त्री उन पर दोष ढूँढ़ने की कोशिश कर रहे हैं।

वह अपने शिष्यों को सतर्क रहने के लिए प्रोत्साहित करने जा रहा है, क्योंकि किसी भी समय, वे इन लोगों की योजनाओं और चालों का शिकार हो सकते हैं। वह उन्हें डर के खिलाफ चेतावनी

देगा, और वह उन्हें परमेश्वर पर भरोसा करने और विश्वास रखने की आवश्यकता को समझने के लिए प्रोत्साहित करेगा। वह उन्हें इस बारे में कुछ महत्वपूर्ण सिद्धांत बताएगा कि वे इस दुनिया में सुसमाचार के गवाह के रूप में कैसे खड़े होते हैं, साथ ही जब भी वे मुसीबत में होते हैं और शासकों और अधिकारियों के सामने बुलाए जाते हैं, तो उन्हें कैसे तैयार रहना चाहिए।

मैं उसी की ओर मुड़ता हूँ। अध्याय 12 की पहली आयत पढ़ते हुए, इस बीच, जब इतने हज़ारों लोग इकट्ठे हो गए कि वे एक दूसरे को रौंद रहे थे, तो उसने पहले अपने शिष्यों से कहना शुरू किया, " फ़रीसियों के कपटपूर्ण जीवन से सावधान रहो। कुछ भी छिपा नहीं है जो प्रकट नहीं किया जाएगा या कुछ भी छिपा नहीं है जो जाना नहीं जाएगा।

इसलिए, जो कुछ तुमने अंधेरे में कहा है, वह उजाले में सुना जाएगा। और जो कुछ तुमने निजी कमरों में फुसफुसाया है, वह घर की छतों पर घोषित किया जाएगा। यहाँ आप आयत 1-3 में सतर्कता के आह्वान में देखते हैं कि यीशु ने फरीसियों के बारे में जो कुछ कहा था, उसमें से कुछ बातों को फिर से दोहराया है, कि वे पाखंडी हैं, और उनका पाखंड उजागर हो जाएगा।

अब, उन्होंने जीवित लोगों का उपयोग उनके पाखंड की ज़हरीली या भ्रष्ट प्रकृति को दर्शाने के लिए किया और उन्हें याद दिलाया कि उन्हें इस बात से अवगत होना चाहिए कि इन फरीसियों की भ्रष्ट प्रकृति वास्तव में बहुत बड़ा भ्रष्टाचार ला सकती है। उन्हें इसके बारे में बहुत, बहुत, बहुत जागरूक होने की आवश्यकता है। लेकिन पाखंड और फरीसियों की शिक्षाओं और उनकी जीवनशैली से होने वाले सभी भ्रष्टाचार की भ्रष्ट प्रकृति के बारे में सतर्कता से परे, अगली चीज़ जिस पर उन्हें ध्यान देना चाहिए वह है भय।

विश्वास के साथ जुड़ी एक चीज़ है डर। ईश्वर में विश्वास डर पर विजय प्राप्त करता है। लेकिन यीशु के शिष्यों को पता होना चाहिए कि ऐसी कई परिस्थितियाँ होंगी जो कुछ हद तक डर को जन्म देंगी, जिस पर विश्वास से विजय पाना ज़रूरी है।

यीशु के शब्दों में, मैं तुमसे कहता हूँ, वह कहता है, मेरे दोस्तों, उनसे मत डरो जो शरीर को मारते हैं, और उसके बाद, उनके पास और कुछ करने के लिए नहीं होता। लेकिन मैं तुम्हें चेतावनी देता हूँ कि किससे डरना है। उससे डरो जो मारने के बाद नरक में डालने का अधिकार रखता है।

हाँ, मैं तुमसे कहता हूँ, उससे डरो। यहाँ उसका मतलब यह है। परमेश्वर से डरो, फरीसियों से नहीं।

ईश्वर से डरो, शास्त्रियों से नहीं। वे आते हैं, भ्रष्ट करने की कोशिश करते हैं, और अगर आपमें उनके द्वारा दोषी ठहराए जाने, गिरफ्तार किए जाने या किसी तरह की परेशानी में डाले जाने के डर से अपने आधार पर खड़े होने का साहस नहीं है, तो आप उन गलत कामों के आगे झुक सकते हैं जो वे आपसे करवाना चाहते हैं। ईश्वर के लिए खड़े होइए और जो सही है उसके लिए खड़े होइए।

और यह जल्दी ही अगली बात की ओर ले जाता है जो यीशु पद 6 से कहेंगे, परमेश्वर पर भरोसा करने की आवश्यकता के बारे में बात करते हुए। परमेश्वर पर भरोसा करने की आवश्यकता को

यीशु द्वारा उल्लेख करके दर्शाया जाएगा, क्या पाँच गौरैया दो पैसे में नहीं बिकती हैं? दूसरे शब्दों में, ये तुच्छ पक्षी सस्ते हैं। वह कहता है कि उनमें से एक को भी परमेश्वर के सामने भुलाया नहीं गया है।

आपके सिर के बाल भी गिने हुए क्यों हैं? डरो मत। आप बहुत सी गौरियों से ज़्यादा मूल्यवान हैं। दूसरे शब्दों में, यीशु कह रहे हैं कि परमेश्वर पर भरोसा रखो क्योंकि सस्ती गौरियों की भी परमेश्वर द्वारा देखभाल और सुरक्षा की जाती है।

जिन लोगों ने सुना है, उनमें से कुछ के पास बहुत ज़्यादा बाल नहीं होते। लेकिन अगर आपके पास बहुत ज़्यादा बाल हैं, तो आप इसके लायक हैं। चूँकि आपके बाल सम संख्या में हैं, इसलिए जो बूँदें इतनी महत्वपूर्ण नहीं होतीं, उन्हें भी भगवान जानते हैं।

यदि परमेश्वर उन छोटी-छोटी बातों पर ध्यान देता है, या उन बातों पर ध्यान देता है जो इतनी सस्ती और शायद इतनी महत्वपूर्ण नहीं हैं, तो मसीह के शिष्यों को पता होना चाहिए कि यदि वे भय के सामने परमेश्वर पर भरोसा करके खड़े होते हैं, तो परमेश्वर उनकी रक्षा करेगा। परमेश्वर उनके पक्ष में होगा। ध्यान दें कि यीशु क्या नहीं कह रहे हैं।

यीशु यह नहीं कह रहे हैं कि चुनौतियाँ नहीं आएंगी। नहीं, चुनौतियाँ आएंगी। उत्पीड़न आ सकता है।

ऐसी परिस्थितियाँ आ सकती हैं जो डर पैदा कर सकती हैं। लेकिन जब वे आएँ, तो ईश्वर पर भरोसा रखें। डरें नहीं।

यह मुझे पुराने नियम की कुछ परंपराओं की याद दिलाता है जहाँ परमेश्वर की उपस्थिति ही वह चीज़ है जो उस चीज़ के सामने आराम और शांति लाती है जो सबसे बुरे प्रकार के भय को जगाने वाली मानी जाती है। भजन 23 की आयत 4 याद आती है जहाँ भजनकार कहता है, भले ही मैं मृत्यु की छाया की घाटी से गुज़रता हूँ, मैं किसी बुराई से नहीं डरता। और एकमात्र कारण जिससे तुम किसी बुराई से नहीं डरोगे वह यह है कि परमेश्वर उसके साथ है।

ईश्वर की उपस्थिति, ईश्वर में विश्वास जो ईश्वर की उपस्थिति को दृश्य में लाता है, वही भय को दूर करता है। मैं भजन संहिता 27 की आयत 4 के बारे में सोच सकता हूँ, जो कहती है, एक बात जो मैं चाहता हूँ और वही मेरी इच्छा है, कि मैं उसमें निवास करूँ, कि मैं उस घर में रहूँ, मैं वहाँ रहूँ जहाँ ईश्वर हर समय रहता है। यीशु ने कहा, डरो मत क्योंकि तुम बहुत सी गौरियों से अधिक मूल्यवान हो, और ईश्वर तुम्हें सुरक्षित रखेगा और तुम्हारे साथ रहेगा।

जैसा कि मैंने पहले बताया, उस अंश में चौथा बिंदु श्लोक 8 का साक्ष्य है, जो कहता है, और मैं तुमसे कहता हूँ, जो कोई मनुष्यों के सामने मुझे, अर्थात् मनुष्य के पुत्र को स्वीकार करेगा, वह परमेश्वर के स्वर्गदूतों के सामने भी स्वीकार करेगा। लेकिन जो कोई मनुष्यों के सामने मेरा इन्कार करेगा, उसका परमेश्वर के स्वर्गदूतों के सामने इन्कार किया जाएगा। और जो कोई मनुष्य के पुत्र के विरुद्ध कोई बात कहेगा, उसे क्षमा किया जाएगा।

लेकिन जो पवित्र आत्मा के खिलाफ ईशनिंदा करता है, उसे माफ़ नहीं किया जाएगा। आप यहाँ पाते हैं कि यीशु किसी भी चुनौती का सामना करने के लिए एक सच्चे गवाह के रूप में दृढ़ रहने की कोशिश कर रहा है। आप उसकी आत्मा के रूप में सच्चे गवाह के रूप में वहाँ खड़े होना चाहते हैं।

वह अपने शिष्यों से बात करता है और भीड़ के सामने बोलता है। उन्हें इस बात से अवगत होना चाहिए कि फरीसी उसे और, निहितार्थ में, उन्हें भी धोखा देने के तरीके खोज रहे हैं। यहाँ एक सच्चा गवाह होना बहुत, बहुत महत्वपूर्ण है।

और मुसीबत के समय, जो लोग ईश्वर को अस्वीकार करेंगे, उन्हें पता होना चाहिए कि अगर वे यहाँ ईश्वर को अस्वीकार करते हैं, तो ईश्वर तब उनसे मुंह मोड़ लेंगे। दूसरे शब्दों में, जब यहाँ और अभी ईश्वर के सामने एक सच्चे गवाह के रूप में खड़े होने का अवसर होता है, चाहे वह फरीसियों का सामना हो या किसी ऐसे न्यायालय में जहाँ कोई मुसीबत में हो और अगर कोई मसीह के लिए खड़े होने का साहस नहीं जुटा पाता है, तो ईश्वर भी न्याय के दिन उसे अस्वीकार कर देगा। याद रखें, ईश्वर के स्वर्गदूतों के सामने की भाषा एक ऐसी युगांतकारी घटना की ओर इशारा करती है जहाँ ईश्वर का न्याय आएगा।

लेकिन लूकन तरीके से, आप यह भी देखना चाहेंगे कि श्लोक 10 वहाँ कैसे समाप्त होता है। लेकिन जो कोई मनुष्य के पुत्र के विरुद्ध कोई शब्द बोलेगा, उसे क्षमा किया जाएगा, लेकिन जो पवित्र आत्मा के विरुद्ध ईशनिंदा करेगा, उसे क्षमा नहीं किया जाएगा। मुझे कहना होगा कि अन्य सुसमाचारों में, वह विशेष पंक्ति बेसल विवाद के साथ जाती है जहाँ यीशु यहाँ-वहाँ भाषा का उपयोग करेंगे।

लेकिन यहाँ, मुद्दा यह है कि लोगों को परमेश्वर के प्रति दृढ़ और सच्चे रहना चाहिए क्योंकि सच्चे गवाहों से अपेक्षा की जाती है कि जब वे परीक्षणों के सामने आते हैं, तो वे स्वीकार करें कि वे उसके सामने खड़े हैं और उसका इन्कार नहीं करेंगे। जब उन्हें आज सार्वजनिक रूप से पेश किया जाता है, तो उन्हें पता होना चाहिए कि वे जो कुछ भी करेंगे, उसका स्वर्गीय न्यायालय में बदला लिया जाएगा। उन्हें यह भी पता होना चाहिए कि इस प्रक्रिया में वे मनुष्य के पुत्र या पवित्र आत्मा के विरुद्ध जो भी निंदा करेंगे, उसे क्षमा नहीं किया जाएगा।

यह कहने का एक और तरीका है कि मसीह के अनुयायियों के रूप में अपने काम को करते हुए सच्चे, दृढ़ और निरंतर शिष्य बने रहें। और आखिरी बात है तैयारी। तैयारी, जैसा कि मैंने आपको पहले बताया था, यीशु पद 11 में जारी रखेंगे।

और जब वे तुम्हें सभाओं और हाकिमों और अधिकारियों के सामने ले जाएँ, तो यह चिन्ता न करना कि हम अपना उत्तर किस रीति से देंगे या क्या कहेंगे। क्योंकि पवित्र आत्मा उसी घड़ी तुम्हें सिखा देगा कि क्या कहना चाहिए। मैं इस परीक्षा के विषय में कुछ बातें स्पष्ट करना चाहता हूँ।

अब, मैंने पिछले व्याख्यान में बताया था कि मैं एक पेंटेकोस्टल चर्च का पादरी था। हाँ, यह सच है। तो, मैं सीधे अपने पेंटेकोस्टल दोस्तों से बात करना चाहता हूँ जो यहाँ सुन रहे हैं।

इस बात पर ध्यान दें कि आज तक पाठ में क्या चल रहा है। और कृपया वह न कहें जो यीशु यहाँ होने के बारे में नहीं कह रहे हैं। जब वे कहते हैं कि पवित्र आत्मा आपको उसी समय सिखाएगा जो आपको कहना चाहिए, तो वे यह नहीं कह रहे थे कि आपको रविवार को उपदेशों के लिए कब तैयार होना चाहिए, बस परमेश्वर का चेहरा देखें और तैयारी न करें, और पवित्र आत्मा आपको सिखाएगा।

वह यह नहीं कह रहा है कि बाइबल स्कूल मत जाओ या कोई धार्मिक शिक्षा मत लो क्योंकि पवित्र आत्मा तुम्हें सिखाएगा कि तुम्हें किसी भी समय क्या कहना चाहिए। नहीं, नहीं, नहीं, और नहीं। यीशु यह कह रहा है कि जब एक सच्चे शिष्य होने के नाते तुम्हें सताया जा रहा है, तुम सत्य के लिए खड़े हो, तुम एक सच्चे गवाह हो, और तुम अधिकारियों के सामने आमने-सामने आ रहे हो, तो वह तुमसे आग्रह करता है कि तुम यह समझो कि तुम्हें उन अवसरों के लिए तैयार रहने के बारे में चिंतित होने की आवश्यकता नहीं है।

लेकिन मसीह की खातिर सताए जाने के दौरान, परमेश्वर आपकी मदद करेगा, और पवित्र आत्मा आपको उस समय बोलने के लिए शब्दों को समझने की क्षमता देगा। इसे कहने या देखने का यह एक और तरीका है। दूसरे शब्दों में, जब आपको शासकों और अधिकारियों के सामने लाया जाता है, तो आप सच्चे शिष्य होने के लिए आप पर फेंके जाने वाले सवालों का पूर्वानुमान कैसे लगा सकते हैं? आप इस बात को लेकर इतने चिंतित हो सकते हैं कि ऐसे मौकों पर क्या कहें कि आप यीशु के सच्चे वफ़ादार अनुयायी होने से चूक जाएँगे।

यह आज के कुछ ईसाइयों की तरह है; वे इस बात से चिंतित नहीं हैं कि वे अपना ईसाई जीवन कैसे जीते हैं; वे क्षमा याचना और अपने विश्वास का बचाव करने के तरीके से इतने ग्रस्त हैं। यीशु कहते हैं, इसके बारे में चिंता मत करो। इसके बारे में चिंता मत करो।

बस मसीह के बताए मार्ग पर चलते रहो। सच्चे गवाह बनो। परमेश्वर पर भरोसा रखो। तुम जहाँ भी खड़े हो, सच्चे गवाह बनो।

और जब आप मुसीबत में खड़े होते हैं, तो परमेश्वर आपको पवित्र आत्मा की सहायता से यह बताएगा कि आपको क्या कहना है। जब यीशु ने कहा कि जब तुम्हें लोगों के सामने लाया जाएगा, तो उसने आराधनालय के सामने लाए जाने का इस्तेमाल किया। हाँ, यह यहूदी शासकों के सामने लाए जाने का भी हो सकता है।

जब उन्होंने अधिकारियों और शासकों की भाषा का इस्तेमाल किया, तो कुछ लोगों ने सुझाव दिया कि शायद वह गैर-यहूदी अधिकारियों या शासकों के बारे में बात कर रहे थे या जब आपको सैनहेड्रिन के सदस्यों या इस तरह के किसी भी व्यक्ति के सामने लाया जाता है। संक्षेप में, वह यहाँ जो संदेश देने की कोशिश कर रहे हैं वह यह है। यदि, मसीह के सच्चे अनुयायी होने के कारण, आपको ऐसी जगह लाया जाता है जहाँ आपके विश्वास के लिए आपका न्याय किया जाएगा, तो उस परमेश्वर पर भरोसा रखें जो आपको पवित्र आत्मा के द्वारा उत्तर देने में सक्षम बनाने में सक्षम है।

चिंता, अभी के लिए, कल के लिए समाधान नहीं है। आत्मा आपको तुरंत वह कहने की क्षमता देगी जो आपको कहने की आवश्यकता है। दोस्तों, जब हम शिष्यत्व के बारे में सोचते हैं और यीशु द्वारा सिखाए गए शिष्यत्व के मार्ग पर चलते हैं, तो याद रखें कि यीशु अपने शिष्यों के साथ गलील से अपनी यात्रा शुरू करते हुए यरूशलेम की ओर बढ़ रहे हैं।

इस बीच, उनके पास शिष्यत्व के सार को उजागर करने के लिए ये अवसर हैं। एक के बाद एक कई चीजें कल्पना की जाएंगी, और उन्हें कुछ मुख्य और गंभीर मुद्दों को संबोधित करना होगा जो सच्चे शिष्य होने पर उभरेंगे। यीशु का सच्चा अनुयायी होना कठिन है, लेकिन एक बात जो चर्च के इतिहास में हमेशा सच रही है और अब यह है।

कुछ लोग सुसमाचार के लिए मर सकते हैं। कुछ लोग सुसमाचार के लिए कष्ट सह सकते हैं। सच्चे गवाह हमेशा अनुभव करेंगे और इन सबके बीच परमेश्वर के हाथ को देखेंगे।

जो सही है उसके लिए खड़े होना और उसके लिए मरना सार्थक है। वास्तव में, प्राचीन दर्शन में, यह महान है। ईसाई धर्म में, हमारे पास सब कुछ है, और हमारे पास एक सही कारण है।

मैं प्रार्थना करता हूँ कि जब हम इन पाठों से गुजरेंगे और आप उनके बारे में सोचेंगे और यीशु मसीह के सच्चे शिष्य होने के नाते, आप यहाँ यीशु की शिक्षाओं के सार की उपेक्षा नहीं करेंगे। एक ऐसे शिष्य होने की आवश्यकता है जो जीवन को निडरता से अपनाए, यह जानते हुए कि पृष्ठभूमि में, झूठे खोजकर्ता आपको बदनाम करने, आपको दोषी ठहराने, यह पता लगाने के लिए अवसर की तलाश में हैं कि आप कहाँ चूकेंगे और इसे आपके खिलाफ़ इस्तेमाल करेंगे। दृढ़ और मजबूत बने रहें, और मैं प्रार्थना करता हूँ कि आप में से जो लोग मध्य पूर्व में हैं, आप में से जो लोग दक्षिण एशिया में हैं, आप में से कुछ एशिया में हैं, आप में से कुछ अफ्रीकी देशों में हैं, और मुख्य रूप से मुस्लिम संदर्भ में जो लोग इन व्याख्यानों में से कुछ के बाद मिशनरियों के रूप में कठिन समय से गुजर रहे हैं, मैं आपको प्रोत्साहित करता हूँ।

परमेश्वर ने वादा किया है कि वह हर परिस्थिति में हमारे साथ रहेगा। उसके बारे में एक बात पक्की है। वह अपना वादा पूरा करने के लिए हमेशा मौजूद रहेगा।

चाहे हमें इस कारण से कष्ट उठाना पड़े या मरना पड़े, वह हमें निराश नहीं करेगा। यीशु मसीह का अनुसरण करने की हमारी निरंतर यात्रा में ईश्वर आपको आशीर्वाद दें। ईश्वर आपको आशीर्वाद दें।

यह डॉ. डैन डार्को द्वारा लूका के सुसमाचार पर दी गई शिक्षा है। यह सत्र 19 है, यीशु बनाम फरीसी और वकील, लूका 11:37-12:12।